विराटपर्व कथासार

विराटपर्व में पाँच उपपर्व तथा २५८९ श्लोक हैं।

१. पाण्डवप्रवेशपर्व

इस उपपर्व में (१-१२) बारह अध्याय तथा ३५४ श्लोक हैं। जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने विराटनगर में पाण्डवों के अज्ञातवास के बारे में बताया। युधिष्ठिर ने धर्म से `अज्ञातवास में पाण्डवों के कहीं भी रहने पर भी लोग उन्हें नहीं पहचान सकते' ऐसा वर पाने के बाद अपने आश्रम जाकर वहाँ के ब्राह्मणों को सब कुछ बताया और अरणीसहित मन्थनकाष्ठ उन्हें सौंप दिया उसने अपने भाइयों से कहा कि--वनवास में बारह वर्ष बीत गये, तेरहवें वर्ष हमें गुप्तरूप से रहना होगा। हे अर्जुन! अज्ञातवास के लिए एक उत्तम स्थान चुनो जहाँ हमारा पता शत्रु न जान सके। उसकी बात सुनकर अर्जुन ने कुछ प्रदेशों का उल्लेख किया। युधिष्ठिर ने उन में से विराटनगर को चुन लिया और भाइयों से पूछा कि हम विराटनगर में मत्स्यराज के पास पहुँचकर किन किन कार्य का भार सँभाल सकेंगे। मैं द्यूतक्रीडा जानता हूँ इसलिए मैं कङ्क नामक ब्राह्मण बनकर विराट की राजसभा का सदस्य हो जाऊँगा। भीमसेन ने कहा कि मैं बल्लव नाम से अपना परिचय देकर पाकक्रिया के लिए विराट के दरबार में उपस्थित हो जाऊँगा। अर्जुन ने कहा कि महाराज! मैं नपुँसक रूप को अपनाकर बृहन्नला नाम से अपना परिचय दूँगा। विराटनगर की स्त्रियों को गीत गाने, नृत्य कराने तथा विविध विविध प्रकार के वाद्य बजाने की शिक्षा दूँगा। युधिष्ठिर के पूछने पर नकुल ने कहा कि हे राजन्! मैं अश्वविद्या में कुशल हूँ। इसलिए विराट राजा के यहाँ ग्रन्थिक नाम से अपना परिचय देकर घोडों को वश में करनेवाला सवार होकर रहूँगा। सहदेव ने कहा कि मैं गाओं का पालनपोषण करने तथा दुहने का काम अच्छी तरह जानता हूँ इसलिए तन्तिपाल नाम से परिचय देकर विराट के यहाँ गोशालाध्यक्ष बनूँगा।

जब युधिष्ठिर द्रौपदी के बारे में विचार करने लगा तब उसने कहा कि मैं सैरन्ध्री कहकर अपना परिचय दूँगी। बालों को सँवारने और वेणीरचना आदि कार्य में मैं बहुत निपुण हूँ। इस प्रकार आपस में चर्चा करके पाण्डवों ने अपने पृथक् पृथक् कर्म बतलाकर धौम्य की भी सम्मति लीं। धौम्य ने पाण्डवों को राजगृह में कैसा व्यवहार करना चाहिए? सब कुछ उपदेश किया। तदनन्तर पाण्डव द्रौपदी के साथ विराट नगर के लिए रवाना हुए। राजधानी के समीप पहुँचकर युधिष्ठिर ने अर्जुन से पूछा कि नगर में प्रवेश करने के पहले हमारे ये अस्त्र शस्त्र कहाँ रखेंगे? अर्जुन ने कहा कि श्मशानभूमि के समीप एक टीले पर शमी का बहुत बडा वृक्ष है। इस पर चढना बहुत कठिन है। यह निर्जन प्रदेश है। इसलिए उस वृक्ष पर अस्त्र रखते समय कोई देखने की भी सम्भावना नहीं है। तदनन्तर युधिष्ठिर ने अस्त्र शस्त्रों को वृक्ष पर रखने के लिए नकुल को आज्ञा दी। उसने वृक्ष पर चढकर उसके खोंखलों में आयुधों को रखकर मजबूत रस्सियों से उन्हें

बांध दिया। उसके बाद पाण्डवों ने एक मृत शरीर को लाकर उस वृक्ष की शाखा में बाँध दिया। उनका आशय यह है कि उसे देखकर लोग दूर चले जाते हैं। तत्पश्चात् उन्होंने अज्ञातवास पूरा करने के लिए विराटनगर में प्रवेश किया। वहाँ प्रवेश करते समय
युधिष्ठिर ने मन ही मन दुर्गादेवी का स्तवन किया। माता दुर्गा ने उन पर अपार अनुग्रह प्रकट कर ली पाण्डवों की रक्षा का भार लेने का विश्वास देकर वहीं अन्तर्धान हो गयी। तदनन्तर पाण्डव अपनी अपनी कृत्यों के अनुरूप वेष के साथ राजभवन में आश्रय पाये।

२. समयपालनपर्व

इसमें (१३) एक अध्याय तथा ४७ श्लोक हैं। मत्स्त्य देश की राजधानी में पाण्डव विराट राजा की सेवा करते हुए अज्ञातवास का समय व्यतीत करने लगे। जनमेजय के पूछने पर वैशम्पायन ने विराट की सेवा में पाण्डवों ने जो जो कार्य किया उन्हें बताया। राजा युधिष्ठिर द्यूतशाला में अक्षों को अपनी इच्छा के अनुसार फेंकते हुए राजा आदि को द्यूत खेलाया करता था। पाण्डव अपने अपने कर्मों से विराट राजा से जो पुरस्काररूप में धन प्राप्त करते उसे आपस में बाँटते थे। द्रौपदी भी यथावकाश अपने पतियों की देखभाल करती थी। पाण्डव विराट नगर में ऐसे छिपकर रहते थे, मानो पुनः माता के गर्भ में निवास कर रहे हों।

तदनन्तर अज्ञातवास में चौथा महीना, प्रारम्भ हुआ। उस समय मत्स्य देश में ब्रह्माजी की पूजा का महान् उत्स्व मनाया जाने लगा। उसमें भाग लेने के लिए चारों दिशाओं से हजारों कुश्ती लडनेवाले मल्ल आने लगे। उन सब में एक बहुत बडा पहलवान था जो दूसरे पहलवानों को अपने साथ लडने के लिए ललकारता था। लेकिन कोई भी उसके सामने ठिक न सका। जब सब मल्ल उदास हो गये तब मत्स्यनरेश ने अपने रसोई घर के मुख्य पाचक भीमसेन को लडाने का आदेश किया। राजा की आज्ञा को उसने मान ली। भयंकर युद्ध में भीम ने उस मल्ल को मार दिया। लोकविख्यात वीर जीमूत के मारे जाने पर राजा बहुत खुश हुआ और उस को बहुत धन दिया। इस प्रकार पाण्डव राजा विराट को संतुष्ट करते वहाँ निगूढरूप से रहते थे।

३. कीचकवधपर्व

इस पर्व में (१४-२४) अध्याय तथा ६३२ श्लोक हैं। विराटनगर में पाण्डवों के अज्ञातवास में दस महीने बीत गये। द्रौपदी रानी सुदेष्णा की सेवा करती अन्तःपुर में रहती थी। अज्ञातवास के एक वर्ष पूरा होने में कुछ ही समय बाकी रह गया। एक दिन विराट राजा के सेनापति कीचक ने अन्तःपुर में द्रौपदी को देखकर कामसंतप्त हो गया। उसने अपनी बहिन सुदेष्णा के पास आकर अपने मन का विचार प्रकट किया और जान लिया कि द्रौपदी सुदेष्णा की परिचारिका है। कीचक ने द्रौपदी के पास जाकर उसे पाने की इच्छा प्रकट की और कहा कि

हे चन्द्रमुखि! मैं अपनी पहली स्त्रियों को त्याग करूँगा। वे सब तुम्हारी दासी बनकर रहेंगी। मैं भी दास की भाँति तुम्हारे अधीन रहूँगा। उसकी बात सुनकर द्रौपदी ने कहा कि हे सूतपुत्र! एक तुच्छ दासी को इस प्रकार याचना करना तुम्हें उचित नहीं है। इसके अलावा मैं दूसरों की पत्नी हूँ, उसकी कामना करना अत्यन्त अनुचित है। द्रौपदी के इस प्रकार समझाने पर भी उसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं आया। बल्कि उसकी कामना करते पाप पङ्किल वचन कहने लगा। तब द्रौपदी ने उसे धमकी देते हुए कही कि 'पाँच भयंकर गन्धर्व निरन्तर मेरी रक्षा करती हैं। वे ही
मेरे पति हैं। अनुचित व्यवहार करते तो कुपित होकर तुझे मार डालेंगे। ऐसा कहकर द्रौपदी ने उसे सद्बुद्धि पाने की सलाह दी।

द्रौपदी से तिरस्कृत कीचक काम से विवश अपनी बहिन सुदेष्णा से मन की व्यथा प्रकट की। सुदेष्णा समझाने का प्रयत्न करने लगी लेकिन असफल रही। आखिर भ्रातृस्नेहवश उसने उसे द्रौपदी की प्राप्ति के लिए उचित उपाय सोचकर कीचक से कहा कि हे कीचक! किसी त्योहार के दिन अपने घर में मदिरा तथा अन्नभोजन की सामग्री तैयार कराओ। उस दिन मैं सैरन्ध्री को मदिरा ले आने के बहाने तुम्हारे पास भेजूँगी। बहिन से आश्वासन पाकर कीचक वहाँ से चला गया।

किसी एक त्योहार के दिन अन्न पान की व्यवस्था हो जाने पर कीचक ने सुदेष्णा को बुलाकर सैरन्ध्री को अपने पास भेजने को कहा। सुदेष्णा ने तुरन्त घर लौटकर द्रौपदी को कीचक के घर जाकर पानीय ले आने को कहा। उसने पात्र को लेकर शङ्का से रोती हुई रक्षा के लिए मन ही मन भगवान सूर्य की प्रार्थना करती कीचक के घर चली। उसे देखकर कीचक अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसने उसका दाहिना हाथ का स्पर्श करके उसे अपने वश में लाने का प्रयत्न किया। तब द्रौपदी ने उसे भूमि पर गिराकर रक्षा के लिए राजसभा की ओर निकली जहाँ राजा युधिष्ठिर थे। कीचक ने भी उठकर भागती हुई द्रौपदी का पीछा किया और उसके केशपाश को पकड लिया। फिर उसने राजा के देखते देखते द्रौपदी को भूमि पर गिराकर पादों से मारा। इतने में भगवान सूर्य के द्वारा द्रौपदी की रक्षा के लिए नियुक्त राक्षस ने कीचक को पकडकर दूर फेंक दिया। वह निश्चेष्ट होकर पृथ्वी पर गिर पडा। उस समय युधिष्ठिर के साथ भीमसेन भी राजसभा में था। युधिष्ठिर ने रहस्य प्रकट हो जाने के डर से भीमसेन को क्रुद्ध होने से रोका। द्रौपदी ने मत्स्यनरेश से अपनी रक्षा की विनति की। लेकिन विराट राज कीचक को दण्ड देने में असमर्थ थे। इसलिए उसने शान्तिपूर्वक उसे समझा बुझाया। द्रौपदी ने अपने वचनों द्वारा मत्स्यराज को बहुत फटकारा। उसने कहा कि कीचक को धर्म का ज्ञान नहीं है। मत्स्यराज भी किसी प्रकार धर्मज्ञ नहीं है। इस अधर्मी राज के पास जो रहते हैं वे भी अधर्मज्ञ हैं। उसकी बातों को सुनकर विराट ने कहा कि मेरे परोक्ष में आप दोनों के बीच कलह हुआ। इसलिए वास्तविक बात को जाने बिना न्याय नहीं कर सकता। सभासद कीचक की निन्दा

तथा सैरन्ध्री की प्रशंसा करने लगे। युधिष्ठिर के कहने से द्रौपदी तीव्रगति से रानी सुदेष्णा के महल को चली गयी। उसने कीचक के वध के लिए व्रत की दीक्षा ग्रहण की।

कीचक के वध की बात सोचती सोचती द्रौपदी भीमसेन के भवन में प्रवेश करके सोते हुये भीम को जगाया। शीघ्र ही, आने का कारण बताकर शयनगृह से तुरन्त चले जाने को भीम ने उससे अनुरोध किया जिससे दूसरे किसी को इसका पता न चल सके। द्रौपदी ने अपनी तथा पाण्डवों की दुर्दशा पर शोक प्रकट किया और कहा हे भीमसेन! सब अनर्थों का कारण मैं हूँ। कीचक के वश में पडने की अपेक्षा विष पीकर प्राणत्याग करना ही अच्छा है। ऐसा कहकर उसने भीमसेन के वक्षःस्थल का आश्रय करके फूट फूटकर रोने लगी। भीमसेन ने उसे हृदय से लगाकर सांत्वना देते हुये कहा कि मैं आज कीच को भाई बन्धुओं सहित मार डालूँगा। दुःख भुलाकर आगामि रात्रि के प्रदोष काल में कीचक से मिलो और उसे नृत्यशाला में आने के लिए
कह दो। नृत्यशाला में उसके आने के बाद बाकी मैं सब कुछ देख लूँगा। भीम के वचन सुनकर द्रौपदी वहाँ से चली गयी।

रात बीत जाने पर कीचक सबेरे उठा और राजमहल में जाकर द्रौपदी से कहा कि हे सैरन्ध्री! मैं ही यहाँ के सेना का मालिक हूँ। तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। अब हम दोनों के परस्पर समागम होना चाहिये। भीमसेन का वचन याद करके, द्रौपदी ने कहा कि कीचक! मेरी एक शर्त को मान लो। तुम मुझसे मिलने आये हो इस को कोई भी न जाने। ऐसा हो तो मैं तुम्हारे अधीन हो जाऊँगी। कीचक ने उसकी शर्त मान ली और कहा कि इस रात को मैं तुम से मिलने के लिए अकेला ही नृत्यशाला में आऊँगा। वह मूर्ख नहीं जानता कि सैरन्ध्री के रूप में मृत्यु। द्रौपदी ने भीमसेन को नृत्यशाला में कीचक के आने का समाचार कह दिया। भीमसेन पहले ही नृत्यशाला पहुँचकर एक शय्या पर लेटा हुआ था। द्रौपदी के साथ समागम की इच्छा से सूतपुत्र कीचक वहाँ पहुँचा और उसे सैरन्ध्री मानकर हाथ से स्पर्श किया। द्रौपदी के अपमान के कारण क्रोध से जलता भीमसेन सहसा उछलकर खडा हुआ। दोनों के बीच घोर युद्ध हुआ। अन्त में भीम ने कीचक को मारकर अपना रोष शान्त कर लिया। उसके पश्चात् द्रौपदी से बिदा लेकर पाकशाला में चला गया। कीचक को मरवाकर द्रौपदी भी बडी प्रसन्न हुई। वह सभाभवन के रक्षकों के पास जाकर बोली कि मदनोन्मत्त कीचक मेरे पति गन्धर्वों द्वारा मारा गया और वहाँ नृत्यशाला में पडा है। यह समाचार पाकर कीचक के बन्धुगण वहाँ आये और उसकी दशा देखकर विलाप करने लगे। उन्होंने देखा कि वहाँ ही सैरन्ध्री खंभे का सहारा लिए खडी है। राजा की अनुमति पाकर सैरन्ध्री को मृतक के साथ जलाने को श्मशानभूमि की ओर ले चले। उसकी आर्तनाद सुनकर महाबाहु भीमसेन ने उपकीचकों को वध करने के लिए वेष बदलकर श्मशानभूमि पहुँचे और वहाँ एक सौ पाँच उपकीचकों का वध करके द्रौपदी को बन्धन से मुक्त करके आश्वासन दिया। नगरवासियों से यह

समाचार पाकर राजा बहुत डर गये और उसके आदेश के अनुसार रानी सुदेष्णा ने सैरन्ध्री को यहाँ से यथेष्ट प्रदेश चले जाने को कहा। द्रौपदी ने तेरह दिन वहाँ रहने की प्रार्थना की। सैरन्ध्री की बात सुनकर सुदेष्णा उससे बोली कि भद्रे! जब तक तुम्हारी इच्छा हो तब तक यहाँ रहो। परन्तु मेरे पति और पुत्रों की विशेषरूप से रक्षा करो।

४. गोहरणपर्व

इस पर्व में (२५-६९) ४५ अध्याय तथा १४४९ श्लोक हैं। अज्ञातवास में स्थित पाण्डवों का पता लगाने के लिए भेजे गये गुप्तचर हस्तिनापुर को वापस आकर द्रोण, कर्ण, कृपाचार्य भीष्म आदि के साथ राजसभा में बैठे दुर्योधन से मिले। उन्होंने कहा कि हे नरेन्द्र! पाण्डवों के पते के लिए हम सब जगह घूमे। लेकिन यह नहीं जान सके। सम्भावना है कि वे नष्ट हो गये हों। द्वारका में भी पाण्डव नहीं हैं। आपके लिए मङ्गलजनक समाचार है कि गन्धर्वों ने दुरात्मा कीचक को भाइयों सहित गुप्तरूप से मार डाला है। इतना कहकर गुप्तचरों ने महाराज के अगले आदेश का निरीक्षण किया। दुर्योधन ने कहा कि इस तेरहवें वर्ष में पाण्डवों के अज्ञातवास का अधिकांश समय बीत चुका है। और थोडे ही दिन शेष है। गुप्तवेष में कहीं भी छिपे होंगे।
इसलिए आप लोग शीघ्र उनका पता लगाने की कोशिश करें। यह सुनकर कर्ण ने दूसरे कार्यकुशल गुप्तचर को भेजने की सलाह दी। दुःशासन ने भी कर्ण की बात का समर्थन किया। तदनन्तर महापराक्रमी द्रोणाचार्य ने कहा कि पाण्डव अनुकूल समय की प्रतीक्षा कर रहे होंगे। वे नष्ट नहीं हो सकते। इस समय जो कुछ करना है उसे सोच विचारकर शीघ्र ही किया जाना चाहिये। विलम्ब करना ठीक नहीं है। जो पुरुष पाण्डवों को ठीक पहचानते हों, उन्हें भेजना चाहिये। भीष्म ने युधिष्ठिर की प्रशंसा की और कहा कि पाण्डव अपने धर्म तथा उत्तम पराक्रम से सुरक्षित हैं। मेरा निश्चित विचार है कि वे नष्ट नहीं हो सकते। जिस देश में युधिष्ठिर होंगे वहाँ के शुभ लक्षण बताकर भीष्म ने कहा कि ऐसा लक्षण जहाँ पाये जायँ वहाँ अवश्य पाण्डव छिपकर रहते होंगे। इसलिए हे दुर्योधन! सोचविचारकर जो कुछ करना है उसे शीघ्र ही करो। इसके पश्चात् महर्षि शरद्वान् के पुत्र कृपाचार्य ने भी भीष्म की बातों का समर्थन किया और कर्तव्य का निश्चय करने का उपदेश दिया।

दुर्योधन ने संदेह व्यक्त किया कि द्रौपदी के निमित्त से भीमसेन ने ही गन्धर्व के नाम से रात के समय महाबली कीचक को मारा होगा। भीष्म के द्वारा बताये गये गुणों में से बहुत से गुण मत्स्यराष्ट्र में दूतों द्वारा मेरे सुनने में आये हैं। इसलिए मत्स्यदेश पर हमें अवश्य आक्रमण करना चाहिये। उसके बाद त्रिगर्तदेश के राजा सुशर्मा ने भी मत्स्यदेश पर आक्रमण करने की सलाह दी। कर्ण ने सुशर्मा के वचन का समर्थन किया। दुर्योधन ने कर्ण की बात मान कर वृद्धजनों की सम्मति के साथ मत्स्यदेश पर आक्रमण करने तथा सेना के प्रस्थान के लिए

प्रबन्ध करने का कार्य छोटा भाई दुःशासन को आदेश दिया। उसने कहा कि पहले सुशर्मा अपनी सेना के साथ निश्चित प्रदेश की ओर जायँ। फिर एक दिन बाद हम वहाँ आयेंगे और एक साथ मिलकर विराटनगर पर चढाईं करेंगे। पहले ग्वालों के पास पहुँचकर वहाँ के गोधन का अपहरण करेंगे। सुशर्मा ने निश्चित प्रणाली के अनुसार कृष्णपक्ष की सप्तमी को अग्निदेव की दिशा (आग्नेय) की ओर से गौओं का अपहरण करने के लिए विराटनगर पर चढाई की। फिर दूसरे दिन अष्टमी को दूसरी ओर से सब कौरवों ने मिलकर चढाई करके गोकुल पर अधिकार जमा लिया।

अज्ञातवास के लिए छद्मवेष में विराट राजा के समीप रहते पाण्डवों का तेरहवाँ वर्ष भी भली भाँति बीत चुका था। महाराज विराट मन्त्रियों तथा पाण्डवों के साथ सभा में बैठे हुये थे। उस समय गोरक्षक ने वहाँ आकर महाराज से निवेदन किया कि त्रिगर्तदेश के सैनिक हमें जीतकर गोसमूह को ले जा रहे हैं। यह सुनकर राजा ने मत्स्यदेश की सेना को एकत्रित किया और चार पाण्डव सहित वे युद्ध के लिए निकले। मत्स्य तथा त्रिगर्तदेशीय सेनाओं के बीच घोर युद्ध हुआ। दूसरे दिन के युद्ध में सुशर्मा ने अपनी सेना के द्वारा मत्स्य राज की सेना को तितर बितर करके मत्स्यनरेश विराट पर चढाई करके जीते जी ही उसे पकड लिया। जब त्रिगर्तों द्वारा पीडित मत्स्य देशीय एवं सैनिक भयभीत होकर भागने लगे और राजा विराट पकड लिया गया तब युधिष्ठिर ने विराट को छुडाने के लिए भीमसेन को आदेश दिया। युधिष्ठिर के आदेश के अनुसार भीमसेन ने सुशर्मा के सामने अपना पराक्रम दिखाया। युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव ने भी हजारों त्रिगर्तों को मार गिराया। विराट के पुत्र श्वेत भी अद्भुत रूप से युद्ध करने लगा।

फिर भीम ने सुशर्मा के पास पहुँचकर उसके रथ के घोडों को मार डाला और उसके सारथी को रथ से नीचे गिरा दिया। इसी समय राजा विराट सुशर्मा के रथ से कूद पडा। इसके बाद भीम ने सुशर्मा को परास्त करके रस्सियों से बाँधकर उसको धर्मराज के पास ले आया। उसके आदेश के अनुसार भीम ने उसे छोड दिया। सुशर्मा ने विराट को प्रणाम करके अपने देश को प्रस्थान किया। यह तो दक्षिणगोग्रहण कहलाता है।

जब राजा विराट अपने गोधन को छुडाने के लिए त्रिगर्तों से युद्ध करने के लिए निकले तब भीष्म, कर्ण, द्रोण आदि के साथ दुर्योधन ने उत्तर दिशा की ओर से आकर विराटदेश पर चढाई करके वहाँ के गोसमुदाय का अपहरण किया। तब गोरक्षक भयभीत होकर विराट के राजभवन पहुँचे और उसके पुत्र भूमिञ्जय (उत्तर) से मिलकर पशुओं का अपहरण होने का समाचार उन्हें सुनाया। उत्तर ने युद्ध के लिए प्रस्थान करने का निश्चय करके अपने लिए योग्य रथ सारथि को ढूँढने का प्रस्ताव किया। उसके सारथि तो पिछले युद्ध में मारे गये। पाण्डवों के अज्ञातवास की अवधी पूरी हो चुकी थी। इसलिए अर्जुन ने द्रौपदी को बुलाकर एकान्त में कहा कि हे प्रिये तुम उत्तर के पास जाकर इस प्रकार कहो कि

बृहन्नला, अर्जुन का प्रिय सारथी था। तुम चाहते तो वह तुम्हारा रथसारथि हो जायगा। द्रौपदी ने उत्तर के समीप जाकर उससे बृहन्नला को सारथि बनाने को कही तो उसकी सूचना के अनुसार राजकुमार उत्तर ने अपनी बहिन उत्तरा से बृहन्नला को ले आने को कहा।

तत्पश्चात् धनुष और सुन्दर बाण लेकर राजकुमार उत्तर सारथि बृहन्नला के साथ युद्ध के लिए प्रस्थित हुये। उस समय राजकुमारी उत्तरा तथा उसकी सखियों ने बृहन्नला से कहा कि युद्धभूमि में भीष्म, द्रोण आदि प्रमुख योद्धाओं को जीतकर हमारी गुडियों के लिए उनके विचित्र रंग के सुन्दर वस्त्र ले आना। बृहन्नला ने कहा कि यदि राजकुमार युद्धभूमि में उन महारथियों को परास्त कर लेंगे तो मैं अवश्य उनके दिव्य और सुन्दर वस्त्र ले आऊंगा। उत्तर ने कौरव सैन्य के पास रथ ले जाने के लिए सारथि बृहन्नला को आदेश दिया। अर्जुन अपने रथ को उसी ओर ले जा रहा था जहाँ असंख्याक कौरव सेना थी। कर्ण, दुर्योधन, कृपाचार्य. भीष्म, अश्वत्थामा, द्रोणाचार्य आदि महान् वीर उसकी रक्षा कर रहे थे। सेना वाहिनी को देखकर उत्तर कुमार भय से काँप उठा और कहा कि बृहन्नले! मुझे कोई भी उपहास करें तथा मेरी गायें भी चली जायँ किन्तु इस युद्ध में मुझे कोई काम नहीं है। ऐसा कहकर उत्तरकुमार मान और अभिमान को त्यागकर बाणसहित धनुष को वहीं छोडकर रथ से कूद पडे और भयभीत होकर भाग गये। उसको रोकने के लिए अर्जुन पीछे दौडा और उसका केश पकड लिया। उसे धैर्य देते हुये कहा कि राजपुत्र! कौरवों के साथ मैं युद्ध करूँगा। तुम केवल मेरे सारथि बनकर बैठे रहो। इस तरह अर्जुन ने उसे समझा बुझाया। वह अपने गाण्डीव धनुष को लेने के लिए उत्तर को रथ पर बिठाकर उसके साथ शमीवृक्ष की ओर गया। भीष्म द्रोण आदि महारथी बृहन्नला को देखकर अर्जुन की शङ्का करके उसकी प्रशंसा करने लगे। जब कर्ण उनका निवारण करता था तब दुर्योधन ने कहा कि कर्ण! बृहन्नला वेषधारी यदि अर्जुन हो तो अच्छी बात है। पाण्डव पहचान लिए जाने के कारण फिर बारह वर्षों तक वनवास करेंगे। यदि वह नपुंसक वेश में दूसरा मनुष्य हो तो तीक्ष्ण बाणों द्वारा उसे भूतल पर मार गिराऊँगा। दुर्योधन के ऐसे कहने पर
भीष्म, द्रोण आदि उसके पराक्रम की प्रशंसा लगे।

शमीवृक्ष के पास ले जाकर अर्जुन ने उत्तर से कहा कि पाण्डवों के धनुष इस वृक्ष पर रखे हुये हैं। इन में अर्जुन के महान् शक्तिशाली गाण्डीव भी है। ऐसा कहकर उसने शमीवृक्ष से अस्त्र उतारने के लिए उत्तर को आदेश दिया। उसने संदेह व्यक्त किया कि इस वृक्ष पर मृत शरीर बाँधा गया। राजकुमार होकर उसे कैसे स्पर्श करूँ। अपवित्र वस्तुओं का स्पर्श करना मुझे उचित नहीं है। अर्जुन ने उसके सन्देह की निवृत्ति की। उत्तर ने उसके आदेश का पालन किया और उन दिव्यास्त्रों को देखकर आश्चर्य चकित हुआ। उसके पूछने पर अर्जुन ने अपना और अपने भाइयों का यथार्थ परिचय दिया। पश्चात् उत्तर ने अर्जुन का प्रणाम किया और कहा कि सौभाग्य से आपका दर्शन हुआ। अज्ञान से अब तक मैं ने जो

कुछ कहा, उसे आप क्षमा करेंगे। मेरा भय दूर हो गया है। आपके लिए मैं रथसारथी बनूँगा।

अर्जुन के कहने पर उत्तर ने उसके सब आयुधों को लेकर शीघ्र ही वृक्ष से उतर आया। व्रत समाप्त होने से अर्जुन नपुंसकभाव से विमुक्त हो गया। उत्तर को सारथी बनाकर अर्जुन शमीवृक्ष का प्रदक्षिण करके सम्पूर्ण अस्त्र शास्त्र लेकर युद्ध के लिए चले।

उसने अपने महान् शङ्क को खूब जोर लगाकर बजाया। शङ्खध्वनि को सुनकर कौरवसेना काँपने लगी। द्रोणाचार्य ने कहा कि आनेवाला अर्जुन के सिवा दूसरा कोई नहीं है। हे दुर्योधन। हमारे लिए विनाशसूचक अपशकुन हो रहे हैं। सब सैनिक हतोत्साह जैसे दिखाई पडते हैं। इसलिए गाओं को भेजकर युद्ध के लिए व्यूहरचना करेंगे। तदनन्तर दुर्योधन ने कहा कि पाण्डवों का वनवास के तेरहवाँ वर्ष पूरा नहीं हुआ। अज्ञातवास में यदि अर्जुन प्रकट हो तो फिर पाण्डव बारह वर्ष तक वनवास में रहेंगे। उनकी अज्ञातवास की अवधि समाप्त हुई या नहीं? यह भीष्मजी जान सकते हैं। आनेवाला अर्जुन हो या अन्य। हमें अवश्य युद्ध करना ही है। कर्ण ने भी उनके वचन का समर्थन किया और अकेले ही अर्जुन का सामना करने का अहंकार व्यक्त किया। कृपाचार्य ने उसके अनुचित व्यवहार का खण्डन किया और एक साथ संगठित होकर अर्जुन के साथ युद्ध करने का प्रस्ताव किया। अश्वत्थामा ने भी कर्ण और दुर्योधन के व्यवहार की निन्दा की और कहा कि मैं अर्जुन के साथ नहीं लडूँगा। हमें तो मत्स्य नरेश से युद्ध करना है। पितामह भीष्म ने सब को शान्त किया। उसने कहा कि आचार्य पुत्र! क्षमा करें। इस समय महान् कार्य उपस्थित है। आपस में विरोध करने का यह समय नहीं है। हम सब लोग मिलकर यहाँ आये अर्जुन से युद्ध करेंगे। पश्चात् दुर्योधन ने कर्ण भीष्म, कृपाचार्य के साथ आचार्य द्रोण से क्षमा माँगी। द्रोणाचार्य ने पाण्डवों के अज्ञातवास के निर्णय के बारे में भीष्म से पूछा।

भीष्म ने कहा कि कला, काष्ठा, मुहूर्त आदि काल के विभागों के द्वारा कालचक्र चल रहा है। इन अवान्तर विभागों बढने घटने से तथा ग्रह नक्षत्रों की गति के व्यतिक्रम से हर पाँचवें वर्ष में दो महीने अधिक मास के बढ जाते हैं। इस प्रकार तेरह वर्षों के पूर्ण होने के पश्चात् भी पाण्डवों के पाँच महीने बारह दिन और अधिक बीत चुके हैं। इस तरह संशय निवृत्ति करके भीष्म ने दुर्योधन से सन्धि का प्रस्ताव किया। लेकिन उसने निर्द्वन्द्व उस प्रस्ताव का तिरस्कार किया और युद्ध की व्यवस्था करने को कह दिया। भीष्म ने उसकी बात मान ली और कहा कि

दुर्योधन! तुम सेना का एक चौथाई भाग लेकर हस्तिनापुर की ओर चले जाओ। दूसरी चौथाई गावों को साथ लेकर जाय। आधी सेना को साथ लेकर हम अर्जुन के साथ लडेंगे। इस प्रकार कहकर भीष्म ने पहले दुर्योधन को और उसके बाद गोधन को भेजकर फिर सेना की व्यूह रचना की। अर्जुन ने महारथियों की सेना को छोडकर केवल दुर्योधन से युद्ध करके उसे जीतकर गावों को लौट आने को

चाहता था। इसलिए उसने उत्तरकुमार को अपने रथ उस ओर ले जाने की आज्ञा दी जहाँ पर राजा दुर्योधन गया। विराटपुत्र उत्तर उसकी आज्ञा का पालन करके रथ को दुर्योधन के पास पहुँचा दिया। अर्जुन ने कौरव सेना पर असंख्याक बाण चलाये। उसने गाओं को जीतकर युद्ध करने की इच्छा से दुर्योधन की ओर निकला। बीच में कर्ण और अर्जुन का महान् युद्ध हुआ। अर्जुन के बाणों से पीडित कर्ण युद्धभूमि छोडकर भाग निकला। कृपाचार्य भी अर्जुन के सामने नहीं ठिक सके। फिर द्रोणाचार्य ने अर्जुन पर धावा किया। अर्जुन उसे प्रणाम किया और पहले उसको प्रहार करने को कहा। तब आचार्य द्रोण ने उस पर इक्कीस बाण चलाये। अर्जुन ने उनको बीच में ही काट दिया। दोनों के बीच घोर युद्ध हुआ। अन्त में घायल होकर द्रोण वहाँ से भाग निकला। दुश्शासन आदि का भी यही दुःस्थिति थी। अर्जुन और भीष्म के बीच घोर युद्ध हुआ। मूर्छित भीष्म को सारथि युद्ध भूमि से ले गया। दुर्योधन भी युद्ध मैदान से निकल गया। पराजित कौरव सेना हस्तिनापुर को प्रस्थित हुई। विजयी अर्जुन उत्तर के साथ विराट नगर चला गया।

राजा विराट दक्षिण गोग्रहण में गाओं को जीतकर चार पाण्डवों के साथ नगर में प्रवेश किया। सब लोग प्रसन्न हुये। अपने पुत्र उत्तर को बृहन्नला सारथी के साथ उत्तरगोग्रहण में कौरवों का सामना करने गया हुआ सुनकर राजा विराट दुःखी हुआ। युधिष्ठिर ने उसको धैर्य दिया। इतने में दूतों ने महाराज को उत्तर के विजय की सूचना दीं। वह बहुत प्रसन्न हुआ। जुआ प्रारम्भ करने को युधिष्ठिर से कहा। उसने जुआ खेलना दोष कहकर उसे त्याग करने की सलाह दी। लेकिन जुआ का खेल आरम्भ हो गया। बीच में युधिष्ठिर ने विराट से कहा कि बृहन्नला जिसका सारथी है वह युद्ध में अवश्य जीतेगा। यह सुनते ही मत्स्य नरेश कुपित हो उठे और उसकी निन्दा की। तदनन्तर विराट के ज्येष्ठपुत्र उत्तर वहाँ पहुँचा और पिताजी से सब कुछ बताया। उसने कहा कि यह मेरा कार्य नहीं है। किसी देवकुमार ने सब कुछ किया है। कल या परसों वह यहाँ प्रकट होगा। फिर बृहन्नला ने महारथियों के शरीर से उतरे गये कपडों को विराटकन्या उत्तरा को दे दिया।

५. वैवाहिकपर्व

इस उपपर्व में (७०-७२) तीन अध्याय तथा १०६ श्लोक हैं। नियत समय तक प्रतिज्ञा की पालन की और तीसरे दिन स्नान करने के बाद पाण्डवों ने युधिष्ठिर को आगे करके विराट की सभा में पहुँचे। विराटकुमार उत्तर ने पाँडवों का परिचय देकर अर्जुन के पराक्रम का वर्णन किया। विराट ने युधिष्ठिर से क्षमा माँगी और सम्पूर्ण राज्य युधिष्ठिर को समर्पित किया। उसने अपनी कन्या उत्तरा को पत्नी रूप में स्वीकार करने को अर्जुन से विनती की। उसने उत्तरा को पुत्रवधू के रूप में ग्रहण किया। अभिमन्यु का विवाह उत्तरा के साथ हुआ। युधिष्ठिर के

निमन्त्रण से भगवान वासुदेव तथा अन्य सम्बन्धी विवाह में उपस्थित हुये।

।। विराटपर्व कथासार समाप्त ।।